

● क्रमसंयोजनम् -

1. यतः राजकीयजनैः तज्जीवने कदापि न उपयुज्यते इत्यतः कारणतः।
2. तत्त्वमस्तिष्कस्य अधः मूल्यम् अपि निर्दिष्टम् आसीत्।
3. किन्तु सर्वेषां मूल्यस्य अपेक्षया राजकीयजनस्य मस्तिष्कस्य मूल्यम् अधिकम् किमर्थम्?
4. कथन् मस्तिष्कसङ्ग्रहालय आसीत्।
5. अत्र विज्ञानिक-प्राध्यापकादीनाम् श्रेष्ठानां मस्तिष्कानि सन्ति।

● संक्षिप्तवर्णनम् (शीर्षकानुसारं वर्णनम्) -

1. विद्याविहीनः पशुः।
2. सत्यमेव जयते।
3. अहिंसा परमो धर्मः।
4. सत्सङ्गतिः।
5. आचार्यः देवो भव।

● प्रश्ननिर्माणम्

1. उपसर्गाः द्वाविशंतिः भवन्ति।
2. नवरसाः भवन्ति।
3. रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति।
4. सर्वेजनाः संसारे सुखमिच्छन्ति।
5. विद्यैव जगति मनुष्यस्य उत्तरां करोति।
6. सत्यभाषणे मनुष्यो निर्भीको भवति।
7. उद्यमेनैव निर्धनः धनिनो भवन्ति।
8. संसारे सर्वेजनाः सुखार्थं प्रयतन्ते।
9. सतां सज्जनानां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते।
10. संस्करणं परिष्करणं संस्कृतिः भवति।

* * * * *

विलोम शब्दः

शब्दानां विपरीतशब्दाः एव विलोमशब्दाः भवन्ति ।

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|------------|------------|-------------|-----------|
| अमृतम् | विषम् | हस्यः | दीर्घः |
| अम्बरम् | पातालः | हासः | रोदनम् |
| अथ | इति | श्रोता | वक्ता |
| अज्ञः | विज्ञः | नवीनम् | प्राचीनम् |
| अनुरक्तः | विरक्तः | निर्गुणः | सगुणः |
| आदिः | अन्तः | स्थावरः | जड़मः |
| उत्कर्षः | अपकर्षः | स्वार्थः | परमार्थः |
| उत्थानम् | पतनम् | तृष्णा | तृसिः |
| उष्णम् | शीतम् | प्राच्यः | पश्चः |
| घातः | प्रतिघातः | अधः | ऊर्ध्वः |
| चिरायुः | अल्पायुः | हेयः | उपादेयः |
| तमः | प्रकाशः | क्षणिकः | शाश्वतः |
| संश्लेषणम् | विश्लेषणम् | वधिकः | रक्षकः |
| दूषितः | स्वच्छः | अस्तः | उदयः |
| उद्यमः | आलस्यम् | अधिकम् | न्यूनम् |
| उन्नतिः | अवनतिः | इष्टः | अनिष्टः |
| कीर्तिः | अपकीर्तिः | जडः | चेतनः |
| कुटिलः | सरलः | कुण्ठयम् | वैकुण्ठम् |
| कटुः | मधुरम् | दुर्गमः | सुगमः |
| कृतज्ञः | कृतघ्नः | दुश्चरित्रः | सच्चरितः |
| खण्डनम् | मण्डनम् | उद्योगः | अनुद्योगः |
| खेदः | प्रसन्नता | संयोगः | वियोगः |
| ग्रहणम् | मोचनम् | सद्गतिः | दुर्गतिः |
| गुप्तः | प्रकटः | हर्षः | शोकः |
| संक्षेपः | विस्तारः | निशा | दिवा |
| संगटनम् | विघटनम् | स्वकीयः | परकीयः |
| सायम् | प्रातः | नूतनम् | प्राचीनम् |

पर्यायवाची-शब्दः

ये शब्दाः मूल शब्दस्य समानार्थी भवन्ति, ते पर्यायवाची भवन्ति इति।

1. अम्बरः - नभः, गगनम्, शून्यम्, व्योम्, अन्तरिक्षम्, आकाशः।
2. अमृतम् - सुधा, पीयूषम्।
3. अग्निः - अनलः, पावकः, दहनः, वह्निः, ज्वालनम्।
4. असुरः - निशिचरः, निशाचरः, दानवः, दैत्यः, दनुजः, राक्षसः।
5. अश्वः - घोटकः, तुरङ्गः, सैन्धवः, वाजिः।
6. अक्षिः - नेत्रम्, चक्षुः, लोचनम्, नयनम्।
7. अशुभम् - अमङ्गलम्, अहितम्, अकल्याणम्।
8. अकिञ्चनः - निर्धनः, दरिद्रः।
9. अहङ्कारः - मानः, अभिमानः, गर्वः, मदः, दर्पः, दम्भः।
10. नक्तम् - निशा, निशि, रात्रिः, राका, रजनी, वामिनी, विभावरी।
11. अर्हः - योग्यः, उपयुक्तः, मान्यः, पूजनीयः, मूल्यवान्।
12. आलोकः - प्रकाशः, प्रभा, कान्तिः।
13. आकांक्षा - इच्छा, अभिलाषा, अपेक्षा।
14. आकुलः - व्यग्रः, व्यस्तः, उद्धिग्रः, क्षुब्धः, विह्वलः।
15. आशयः - अभिप्रायः, आकूतः, तात्पर्यः।
16. आगमनम् - आगतिः, प्रासिः, आगमः।
17. इन्द्रः - देवेन्द्रः, देवपतिः, सुरपतिः, शाचीपतिः, देवेशः, सुरेन्द्र।
18. उत्साहः - साहसी, उमङ्गः।
19. कमलम् - अम्बुजम्, नीरजम्, वारिजम्, सरसिजम्, सरोजः, जलजम्।
20. कोकिलः - पिकः, वसन्तदूतः।
21. केशः - अलकम्, चिकुरम्, कचम्, मूर्धजः।
22. खगः - पक्षी, विहगः, द्विजः, विहङ्गम्, नभचरः।
23. क्रोधः - कोपः, रोषः, मन्युः, अमर्षः।
24. गणेशः - गजवदनः, गजाननः, लम्बोदरः, विनायकः, एकदन्तः, गणपतिः।
25. गजः - हस्ती, करी, दन्ती, नागः, द्विपः, कुञ्जरः।
26. गृहम् - सदनं, भवनं, निकेतम्, निलयः, गेहम्।
27. गङ्गा - भागीरथी, त्रिपथगाः, सुरनदी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, शिवप्रिया।
28. चन्द्रः - शशि, विधुः, मयङ्गः, इन्दुः, सुधाकरः, शशाङ्कः।
29. चातकः - मेघजीवनः, सारङ्गः, कण्ठछिद्रः।
30. जलम् - नीरम्, वारि, अम्बुः, तोयः, जीवनम्, उदकम्, आपः।

कारक-ज्ञानम्

‘क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्।’ अर्थात् यत् क्रिया सह सम्बन्धं प्राप्नोति तत् कारकम्। अथवा कर्तुः क्रिया सह सम्बन्धः एव कारकम् इति। कारकाणि षड्विधानि भवन्ति –

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्॥

एतानि सर्वाणि कारकाणि क्रियासम्पादने सहायकानि भवन्ति। यथा –

‘हे छात्राः! दशरथस्य पुत्रः रामः सीतायै नगर्याः बहिः लङ्घयां रावणं बाणेन हतवान्।’

एतेषु वाक्येषु षट्कारकाणां क्रिया सह प्रत्यक्षः सम्बन्धः अस्ति। यथा –

1. रामः - क्रियायाः सम्पादकः - कर्ता
2. रावणम् - क्रियायाः कर्म - कर्मम्
3. बाणेन - क्रियासम्पादनाय सहायकम् - करणम्
4. सीतायै - क्रियायाः सम्पादनं यस्य कृते - सम्प्रदानम्।
5. नगर्याः - यस्मात् क्रियायाः निष्कर्षणम् - अपादानम्।
6. लङ्घयाम् - यस्मिन् स्थले क्रिया भवति - अधिकरणम्।

वाक्येषु हे छात्राः! सम्बोधनम् अस्ति। सम्बोधनस्य प्रथमायां विभक्त्याम् अन्तर्भावः भवति। ‘दशरथस्य’ शब्दः कारकं नास्ति। कारणम् - षष्ठी विभक्तेः क्रिया सह अप्रत्यक्ष सम्बन्धः वर्तते। अतः षष्ठियन्त दशरथस्य शब्दे षष्ठी विभक्तिः भवति न तु कारकम्।

विभक्ति-ज्ञानम्

मूलधातुः प्रत्ययः उपसर्गान् त्यक्त्वा सार्थकशब्दः प्रातिपदिकः कथ्यते। प्रातिपदिकस्य अन्ते पदनिर्माणाय सुप् प्रत्ययस्य प्रयोगं भवति।

प्रातिपदिकस्य द्विधा भेदाः -

1. अजन्तः (स्वरान्तः)
2. हलन्तः (व्यञ्जनान्तः)

‘सुप्’ प्रत्ययस्य मूलरूपं किञ्चित् परिवर्तनेन सह अजन्तेन सह मिलति किन्तु हलन्तशब्दैः सह स विना परिवर्तनस्य योजयति।

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमा (कर्ता) | सु | औ | जस् |
| द्वितीया (कर्मम्) | अम् | औट् | जस् |
| तृतीया (करणम्) | टा | भ्याम् | भिस् |
| चतुर्थी (सम्प्रदानम्) | डे | भ्याम् | भ्यस् |
| पञ्चमी (अपादानम्) | डसि | भ्याम् | भ्यस् |
| षष्ठी (सम्बन्धम्) | डस् | ओस् | आम् |
| सप्तमी (अधिकरणम्) | डिं | ओस् | सुप् |

रूपभेदेन संज्ञादि शब्दानां त्रयाः भेदाः भवन्ति –

1. संज्ञाशब्दः
2. सर्वनामशब्दः
3. सङ्ख्यावाचकशब्दः।

छात्र (अजन्त पुँलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|------------|--------------|--------------|
| प्रथमा | छात्रः | छात्रौ | छात्राः |
| द्वितीया | छात्रम् | छात्रौ | छात्रान् |
| तृतीया | छात्रेण | छात्राभ्याम् | छात्रैः |
| चतुर्थी | छात्राय | छात्राभ्याम् | छात्रेभ्यः |
| पञ्चमी | छात्रात् | छात्राभ्याम् | छात्रेभ्यः |
| षष्ठी | छात्रस्य | छात्रयोः | छात्राणाम् |
| सप्तमी | छात्रे | छात्रयोः | छात्रेषु |
| सम्बोधनम् | हे छात्र ! | हे छात्रौ ! | हे छात्राः ! |

सखिन् (हलन्त पुँलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|----------|------------|------------|
| प्रथमा | सखा | सखायौ | सखायः |
| द्वितीया | सखायम् | सखायौ | सखीन् |
| तृतीया | सख्या | सखिभ्याम् | सखिभिः |
| चतुर्थी | सख्ये | सखिभ्याम् | सखिभ्यः |
| पञ्चमी | सख्युः | सखिभ्याम् | सखिभ्यः |
| षष्ठी | सख्युः | सख्योः | सखीनाम् |
| सप्तमी | सख्यौ | सख्योः | सखिषु |
| सम्बोधनम् | हे सखे ! | हे सखायौ ! | हे सखायः ! |

सुधी (अजन्त पुँलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा | सुधीः | सुधियौ | सुधियः |
| द्वितीया | सुधियम् | सुधियौ | सुधियः |
| तृतीया | सुधिया | सुधीभ्याम् | सुधीभिः |
| चतुर्थी | सुधिये | सुधीभ्याम् | सुधीभ्यः |
| पञ्चमी | सुधियः | सुधीभ्याम् | सुधीभ्यः |
| षष्ठी | सुधियः | सुधियोः | सुधीनाम् |
| सप्तमी | सुधियि | सुधियोः | सुधीषु |
| सम्बोधनम् | हे सुधी ! | हे सुधियौ ! | हे सुधियः ! |

साधु (अजन्त पुळिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|------------|------------|
| प्रथमा | साधुः | साधू | साधवः |
| द्वितीया | साधुम् | साधू | साधून् |
| तृतीया | साधुना | साधुभ्याम् | साधुभिः |
| चतुर्थी | साधवे | साधुभ्याम् | साधुभ्यः |
| पञ्चमी | साधोः | साधुभ्याम् | साधुभ्यः |
| षष्ठी | साधोः | साध्वोः | साधूनाम् |
| सप्तमी | साधौ | साध्वोः | साधुषु |
| सम्बोधनम् | हे साधो ! | हे साधू ! | हे साधवः ! |

पितृ (अजन्त पुळिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|------------|------------|
| प्रथमा | पिता | पितरौ | पितरः |
| द्वितीया | पितरम् | पितरौ | पितृन् |
| तृतीया | पित्रा | पितृभ्याम् | पितृभिः |
| चतुर्थी | पित्रे | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| पञ्चमी | पितुः | पितृभ्याम् | पितृभ्यः |
| षष्ठी | पितुः | पित्रोः | पितृणाम् |
| सप्तमी | पितरि | पित्रोः | पितृषु |
| सम्बोधनम् | हे पितः ! | हे पितरौ ! | हे पितरः ! |

‘राजन्’ (हलन्त पुळिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|---------------|-------------|-------------|
| प्रथमा | राजा | राजानौ | राजानः |
| द्वितीया | राजानम् | राजानौ | राजः |
| तृतीया | राजा | राजभ्याम् | राजाभिः |
| चतुर्थी | राजे | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| पञ्चमी | राजः | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| षष्ठी | राजः | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| सप्तमी | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः | राजसु |
| सम्बोधनम् | हे राजन् ! | हे राजानौ ! | हे राजानः ! |

‘मरुत्’ (हलन्त पुंलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | मरुत् | मरुतौ | मरुतः |
| द्वितीया | मरुतम् | मरुतौ | मरुतः |
| तृतीया | मरुता | मरुदभ्याम् | मरुदिभः |
| चतुर्थी | मरुते | मरुदभ्याम् | मरुदभ्यः |
| पञ्चमी | मरुतः | मरुदभ्याम् | मरुदभ्यः |
| षष्ठी | मरुतः | मरुतोः | मरुताम् |
| सप्तमी | मरुति | मरुतोः | मरुत्सु |
| सम्बोधनम् | हे मरुत्-द्! | हे मरुतौ! | हे मरुतः! |

‘चन्द्रमस्’ (हलन्त पुंलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | चन्द्रमा: | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| द्वितीया | चन्द्रमसम् | चन्द्रमसौ | चन्द्रमसः |
| तृतीया | चन्द्रमसा | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभिः |
| चतुर्थी | चन्द्रमसे | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभ्यः |
| पञ्चमी | चन्द्रमसः | चन्द्रमोभ्याम् | चन्द्रमोभ्यः |
| षष्ठी | चन्द्रमसः | चन्द्रमसोः | चन्द्रमसाम् |
| सप्तमी | चन्द्रमसि | चन्द्रमसोः | चन्द्रमस्सु |
| सम्बोधनम् | हे चन्द्रमः! | हे चन्द्रमसौ! | हे चन्द्रमसः! |

‘विद्या’ (अजन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | विद्या | विद्ये | विद्याः |
| द्वितीया | विद्याम् | विद्ये | विद्याः |
| तृतीया | विद्यया | विद्याभ्याम् | विद्याभिः |
| चतुर्थी | विद्यायै | विद्याभ्याम् | विद्याभ्यः |
| पञ्चमी | विद्यायाः | विद्याभ्याम् | विद्याभ्यः |
| षष्ठी | विद्यायाः | विद्ययोः | विद्यानाम् |
| सप्तमी | विद्यायाम् | विद्ययोः | विद्यासु |
| सम्बोधनम् | हे विद्ये! | हे विद्ये! | हे विद्याः! |

‘नीति’ (अजन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | नीतिः | नीती | नीतयः |
| द्वितीया | नीतिम् | नीती | नीतीः |
| तृतीया | नीत्या | नीतिभ्याम् | नीतिभिः |
| चतुर्थी | नीतये, नीत्यै | नीतिभ्याम् | नीतिभ्यः |
| पञ्चमी | नीत्याः | नीतिभ्याम् | नीतिभ्यः |
| षष्ठी | नीत्याः | नीत्योः | नीतीनाम् |
| सप्तमी | नीत्याम् | नीत्योः | नीतिषु |
| सम्बोधनम् | हे नीते ! | हे नीती ! | हे नीतयः ! |

‘नारी’ (अजन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | नारी | नार्यौ | नार्यः |
| द्वितीया | नारीम् | नार्यौ | नारीः |
| तृतीया | नार्या | नारीभ्याम् | नारीभिः |
| चतुर्थी | नार्ये | नारीभ्याम् | नारीभ्यः |
| पञ्चमी | नार्याः | नारीभ्याम् | नारीभ्यः |
| षष्ठी | नार्याः | नार्योः | नारीणाम् |
| सप्तमी | नार्याम् | नार्योः | नारीषु |
| सम्बोधनम् | हे नारि ! | हे नार्यौ ! | हे नार्यः ! |

‘वधू’ (अजन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|--------------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | वधूः | वध्वौ | वध्वः |
| द्वितीया | वधूम् | वध्वौ | वधूः |
| तृतीया | वध्वा | वधूभ्याम् | वधूभिः |
| चतुर्थी | वध्वै | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| पञ्चमी | वध्वाः | वधूभ्याम् | वधूभ्यः |
| षष्ठी | वध्वाः | वध्वोः | वधूनाम् |
| सप्तमी | वध्वाम् | वध्वोः | वधूषु |
| सम्बोधनम् | हे वधौ !, हे वधू ! | हे वध्वौ ! | हे वध्वः ! |

‘मातृ’ (अजन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | माता | मातरौ | मातरः |
| द्वितीया | मातरम् | मातरौ | मातृः |
| तृतीया | मात्रा | मातृभ्याम् | मातृभिः |
| चतुर्थी | मात्रे | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| पञ्चमी | मातुः | मातृभ्याम् | मातृभ्यः |
| षष्ठी | मातुः | मात्रोः | मातृणाम् |
| सप्तमी | मातरि | मात्रोः | मातृषु |
| सम्बोधनम् | हे मातः! | हे मातरौ! | हे मातरः! |

‘वाच्’ (हलन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | वाक्, वाग् | वाचौ | वाचः |
| द्वितीया | वाचम् | वाचौ | वाचः |
| तृतीया | वाचा | वाग्भ्याम् | वारिभिः |
| चतुर्थी | वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| पञ्चमी | वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः |
| षष्ठी | वाचः | वाचोः | वाचाम् |
| सप्तमी | वाचि | वाचोः | वाक्षु |
| सम्बोधनम् | हे वाक्! | हे वाचौ! | हे वाचः! |

‘सरित्’ (हलन्त स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | सरित्, सरिद् | सरितौ | सरितः |
| द्वितीया | सरितम् | सरितौ | सरितः |
| तृतीया | सरिता | सरिद्भ्याम् | सरिद्धिः |
| चतुर्थी | सरिते | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः |
| पञ्चमी | सरितः | सरिद्भ्याम् | सरिद्भ्यः |
| षष्ठी | सरितः | सरितोः | सरिताम् |
| सप्तमी | सरिति | सरितोः | सरित्सु |
| सम्बोधनम् | हे सरित्! | हे सरितौ! | हे सरितः! |

‘ज्ञान’ (अजन्त नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि |
| द्वितीया | ज्ञानम् | ज्ञाने | ज्ञानानि |
| तृतीया | ज्ञानेन | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानैः |
| चतुर्थी | ज्ञानाय | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानेभ्यः |
| पञ्चमी | ज्ञानात् | ज्ञानाभ्याम् | ज्ञानेभ्यः |
| षष्ठी | ज्ञानस्य | ज्ञानयोः | ज्ञानानाम् |
| सप्तमी | ज्ञाने | ज्ञानयोः | ज्ञानेषु |
| सम्बोधनम् | हे ज्ञान ! | हे ज्ञाने ! | हे ज्ञानानि ! |

‘वारि’ (अजन्त नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | वारि | वारिणी | वारीणि |
| द्वितीया | वारि | वारिणी | वारीणि |
| तृतीया | वारिणा | वारिभ्याम् | वारिभिः |
| चतुर्थी | वारिणे | वारिभ्याम् | वारिभ्यः |
| पञ्चमी | वारिणः | वारिभ्याम् | वारिभ्यः |
| षष्ठी | वारिणः | वारिणोः | वारीणाम् |
| सप्तमी | वारिणि | वारिणोः | वारिषु |
| सम्बोधनम् | हे वारे !, हे वारि ! | हे वारिणी ! | हे वारीणि ! |

‘मधु’ (अजन्त नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------------|----------------|------------------|-----------------|
| प्रथमा | मधु | मधुनी | मधूनि |
| द्वितीया | मधु | मधुनी | मधूनि |
| तृतीया | मधुना | मधुभ्याम् | मधुभिः |
| चतुर्थी | मधुने | मधुभ्याम् | मधुभ्यः |
| पञ्चमी | मधुनः | मधुभ्याम् | मधुभ्यः |
| षष्ठी | मधुनः | मधुनोः | मधूनाम् |
| सप्तमी | मधुनि | मधुनोः | मधुषु |
| सम्बोधनम् | हे मधु, मधो ! | हे मधुनी ! | हे मधूनि ! |

‘कर्तृ’ (अजन्त पुंलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा | कर्ता | कर्तारौ | कर्तारः |
| द्वितीया | कर्तारम् | कर्तारौ | कर्तृन् |
| तृतीया | कर्ता | कर्तृभ्याम् | कर्तृभिः |
| चतुर्थी | कर्त्रे | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः |
| पञ्चमी | कर्तुः | कर्तृभ्याम् | कर्तृभ्यः |
| षष्ठी | कर्तुः | कर्त्रोः | कर्तृणाम् |
| सप्तमी | कर्तरि | कर्त्रोः | कर्तृषु |
| सम्बोधनम् | हे कर्तः! | हे कर्तारौ! | हे कर्तारः! |

‘महत्’ (हलन्त नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|----------|------------|-------------|
| प्रथमा | महत् | महती | महान्ति |
| द्वितीया | महत् | महती | महान्ति |
| तृतीया | महता | महद्भ्याम् | महद्भिः |
| चतुर्थी | महते | महद्भ्याम् | महद्भ्यः |
| पञ्चमी | महतः | महद्भ्याम् | महद्भ्यः |
| षष्ठी | महतः | महतोः | महताम् |
| सप्तमी | महति | महतोः | महत्सु |
| सम्बोधनम् | हे महत्! | हे महती! | हे महान्तः! |

‘जन्मन्’ (हलन्त नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|----------|------------|-------------|
| प्रथमा | जन्म | जन्मनी | जन्मानि |
| द्वितीया | जन्म | जन्मनी | जन्मानि |
| तृतीया | जन्मना | जन्मभ्याम् | जन्मभिः |
| चतुर्थी | जन्मने | जन्मभ्याम् | जन्मभ्यः |
| पञ्चमी | जन्मनः | जन्मभ्याम् | जन्मभ्यः |
| षष्ठी | जन्मनः | जन्मनोः | जन्मनाम् |
| सप्तमी | जन्मनि | जन्मनोः | जन्मसु |
| सम्बोधनम् | हे जन्म! | हे जन्मनी! | हे जन्मानि! |

‘सर्व’ (पुंलिङ्ग) सर्वनाम

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|------------|-------------|-----------|
| प्रथमा | सर्वः | सर्वौ | सर्वे |
| द्वितीया | सर्वम् | सर्वौ | सर्वान् |
| तृतीया | सर्वेण | सर्वाभ्याम् | सर्वैः |
| चतुर्थी | सर्वस्मै | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| पञ्चमी | सर्वस्मात् | सर्वाभ्याम् | सर्वेभ्यः |
| षष्ठी | सर्वस्य | सर्वयोः | सर्वेषाम् |
| सप्तमी | सर्वस्मिन् | सर्वयोः | सर्वेषु |

‘सर्व’ (स्त्रीलिङ्ग) सर्वनाम्

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-------------|-------------|-----------|
| प्रथमा | सर्वा | सर्वै | सर्वाः |
| द्वितीया | सर्वाम् | सर्वै | सर्वाः |
| तृतीया | सर्वाया | सर्वाभ्याम् | सर्वाभिः |
| चतुर्थी | सर्वास्यै | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| पञ्चमी | सर्वास्याः | सर्वाभ्याम् | सर्वाभ्यः |
| षष्ठी | सर्वास्याः | सर्वयोः | सर्वासाम् |
| सप्तमी | सर्वास्याम् | सर्वयोः | सर्वासु |

‘अदस्’ (पुंलिङ्ग) सर्वनाम्

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|-----------|----------|
| प्रथमा | असौ | अमू | अमी |
| द्वितीया | अमुम् | अमू | अमून् |
| तृतीया | अमुना | अमूभ्याम् | अमीभिः |
| चतुर्थी | अमुष्मै | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| पञ्चमी | अमुष्मात् | अमूभ्याम् | अमीभ्यः |
| षष्ठी | अमुष्य | अमुयोः | अमीषाम् |
| सप्तमी | अमुष्मिन् | अमुयोः | अमीषु |

‘अदस्’ (स्त्रीलिङ्ग) सर्वनाम्

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|-----------|----------|
| प्रथमा | असौ | अमू | अमूः |
| द्वितीया | अमूम् | अमू | अमूः |
| तृतीया | अमुया | अमूभ्याम् | अमूभिः |
| चतुर्थी | अमुष्टै | अमूभ्याम् | अमूभ्यः |
| पञ्चमी | अमुष्टाः | अमूभ्याम् | अमूभ्यः |
| षष्ठी | अमुष्टाः | अमुयोः | अमूषाम् |
| सप्तमी | अमुष्टाम् | अमुयोः | अमूषु |

‘युष्मद्’ सर्वनाम्

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|--------------|------------------|----------------|
| प्रथमा | त्वम् | युवाम् | यूयम् |
| द्वितीया | त्वाम्, त्वा | युवाम्, वाम् | युष्मान्, वः |
| तृतीया | त्वया | युवाभ्याम्, वाम् | युष्माभिः |
| चतुर्थी | तुभ्यम्, ते | युवाभ्याम्, वाम् | युष्मभ्यम्, वः |
| पञ्चमी | त्वत् | युवाभ्याम्, वाम् | युष्मत् |
| षष्ठी | तव, ते | युवयोः, वाम् | युष्माकम्, वः |
| सप्तमी | त्वयि | युवयोः, वाम् | युष्मासु |

‘अस्मद्’ सर्वनाम्

| विभक्ति: | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|------------|---------------|---------------|
| प्रथमा | अहम् | आवाम् | वयम् |
| द्वितीया | माम्, मा | आवाम्, नौ | अस्मान्, नः |
| तृतीया | मया | आवाभ्याम् | अस्माभिः |
| चतुर्थी | मह्यम्, मे | आवाभ्याम्, नौ | अस्मभ्यम्, नः |
| पञ्चमी | मत् | आवाभ्याम् | अस्मत् |
| षष्ठी | मम, मे | आवयोः, नौ | अस्माकम्, नः |
| सप्तमी | मयि | आवयोः, नौ | अस्मासु |

‘एक’ (एकवचने) संख्यावाची

| विभक्ति: | पुलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|----------|----------|-------------|-------------|
| प्रथमा | एकः | एकम् | एका |
| द्वितीया | एकम् | एकम् | एकाम् |
| तृतीया | एकेन | एकेन | एकया |
| चतुर्थी | एकस्मै | एकस्मै | एकस्यै |
| पञ्चमी | एकस्मात् | एकस्मात् | एकस्याः |
| षष्ठी | एकस्य | एकस्य | एकस्याः |
| सप्तमी | एकस्मिन् | एकस्मिन् | एकस्याम् |

‘द्वि’ (द्विवचने) संख्यावाची

| विभक्ति: | पुलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|----------|------------|-------------|-------------|
| प्रथमा | द्वौ | द्वे | द्वे |
| द्वितीया | द्वौ | द्वे | द्वे |
| तृतीया | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् |
| चतुर्थी | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् |
| पञ्चमी | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् | द्वाभ्याम् |
| षष्ठी | द्वयोः | द्वयोः | द्वयोः |
| सप्तमी | द्वयोः | द्वयोः | द्वयोः |

‘त्रि’ (बहुवचने) संख्यावाची

| विभक्ति: | पुलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग |
|----------|-----------|-------------|-------------|
| प्रथमा | त्रयः | त्रीणि | तिस्रः |
| द्वितीया | त्रीन् | त्रीणि | तिस्रः |
| तृतीया | त्रिभिः | त्रिभिः | तिसृभिः |
| चतुर्थी | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः |
| पञ्चमी | त्रिभ्यः | त्रिभ्यः | तिसृभ्यः |
| षष्ठी | त्रयाणाम् | त्रयाणाम् | तिसृणाम् |
| सप्तमी | त्रिषु | त्रिषु | तिसृषु |

क्रमवाचक / पूरणार्थक संख्या

| संख्या | पुलिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|-----------------|------------------|----------------|-------------|
| 1 (पहला) | प्रथमः | प्रथमा | प्रथमम् |
| 2 (दूसरा) | द्वितीयः | द्वितीया | द्वितीयम् |
| 3 (तीसरा) | तृतीयः | तृतीया | तृतीयम् |
| 4 (चौथा) | चतुर्थः | चतुर्थी | चतुर्थम् |
| 5 (पाँचवाँ) | पञ्चमः | पञ्चमी | पञ्चम् |
| 6 (छठा) | षष्ठः | षष्ठी | षष्ठम् |
| 7 (सातवाँ) | सप्तमः | सप्तमी | सप्तमम् |
| 8 (आठवाँ) | अष्टमः | अष्टमी | अष्टमम् |
| 9 (नौवाँ) | नवमः | नवमी | नवमम् |
| 10 (दसवाँ) | दशमः | दशमी | दशमम् |
| 11 (ग्याहरवाँ) | एकादशः | एकादशी | एकादशम् |
| 12 (बारहवाँ) | द्वादशः | द्वादशी | द्वादशम् |
| 13 (तेरहवाँ) | त्र्योदशः | त्र्योदशी | त्र्योदशम् |
| 14 (चौदहवाँ) | चतुर्दशः | चतुर्दशी | चतुर्दशम् |
| 15 (पन्द्रहवाँ) | पञ्चदशः | पञ्चदशी | पञ्चदशम् |
| 16 (सोलहवाँ) | षोडशः | षोडशी | षोडशम् |
| 17 (सत्रहवाँ) | सप्तदशः | सप्तदशी | सप्तदशम् |
| 18 (अठारहवाँ) | अष्टादशः | अष्टादशी | अष्टादशम् |
| 19 (उन्नीसवाँ) | नवदशः | नवदशी | नवदशम् |
| 20 (बीसवाँ) | विंशतितमः, विंशः | विंशतितमी, तमा | विंशतितमम् |

लकारज्ञानम्

संस्कृतभाषायाः समग्रधातवः लकारेषु विभक्ताः सन्ति । विभिन्नार्थेषु दशलकाराः प्रयुज्यन्ते । संस्कृतभाषा शिक्षणे तेषां ज्ञानं परमावश्यकम् अतः अत्र तत्स्वरूपं भेदं प्रयोगञ्च निर्दिश्यते –

‘लकारः’ इत्यस्य तात्पर्यमस्ति वृत्तिः अर्थात् स्वभावः । वस्तुतः लकारस्य प्रयोगः कालनिर्धारणाय, भावनिर्धारणाय च भवति । धातवः त्रिविधः भवन्ति परस्मैपदी, आत्मनेपदी, उभयपदी च । इमे धातवः लकारेषु विभक्ताः ।

लकारः दशविधः – लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् च ।

परन्तु षष्ठीतः द्वादशकक्षापर्यन्तं प्रामुख्येन निम्नलिखितपञ्चलकाराणां प्रयोगः भवति –

| | | |
|----------|---|-------------------|
| लट् | – | वर्तमानकालार्थे |
| लृट् | – | भविष्यकालार्थे |
| लङ् | – | भूतकालार्थे |
| लोट् | – | आज्ञार्थे |
| विधिलिङ् | – | ‘चाहिये’ इत्यर्थे |

1. संस्कृतव्याकरणे रूपनिर्माणाय अष्टादशप्रत्ययाः भवन्ति । तेषु नवप्रत्ययाः परस्मैपदे भवन्ति, नवप्रत्ययाश्च आत्मनेपदे भवन्ति ।
2. विकरणप्रत्ययेन मूलप्रत्ययेषु परिवर्तनं भवति ।
3. लकारवैविध्ययेन अपि मूलप्रत्ययेषु परिवर्तनं भवति ।
4. विकरणप्रत्ययेन मूलप्रत्ययेन च परिवर्तनं भवति, तदपि गुणानुसारं विकरणप्रत्ययभेदात् भिन्नं भवति ।
5. ये प्रत्ययाः धातुभ्यः विधीयन्ते क्रियापदरचनायै ते तिङ्ग्रप्रत्ययाः भवन्ति । एते परस्मैपदे आत्मनेपदे च क्रमशः नवसङ्ख्यकाः भवन्ति । तद्यथा-

परस्मैपदे

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | तिप् | तस् | त्ति |
| मध्यमपुरुषः | सिप् | थस् | थ |
| उत्तमपुरुषः | मिप् | वस् | मस् |

आत्मनेपदे

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | त | आताम् | ज्ञ |
| मध्यमपुरुषः | थास् | आथाम् | ध्वम् |
| उत्तमपुरुषः | इङ् | वहिङ् | महिङ् |

एते अष्टादशप्रत्ययाः तिप् इत्यनेनारभ्य महिङ् इति पर्यन्तं तिङ्ग्रप्रत्ययाः कथ्यन्ते । एतेषाम् अष्टादशप्रत्ययानां योगेन धातुनां विविधलकारेषु परस्मैपदे, आत्मनेपदे च रूपाणि विरच्यन्ते ।